मीरां का रचना संसार

पल्लव

साहित्यकार

संपर्क :
फ्लेट न. 393 डी.डी.ए.
ब्लॉक सी एंड डी, कनिष्क
अपार्टमेंट,शालीमार बाग,
नई दिल्ली-110088
मो. 8130072004

मीरां के जीवन और समय पर गंभीर पुस्तक 'पचरंग चोला पहन सखी री' के लेखक माधव हाड़ा ने साहित्य अकादेमी के लिए 'मीरां रचना संचयन' तैयार किया है जिसमें मीरां के चुने हुए 316 पद हैं। माधव हाड़ा ने संचयन के साथ एक भूमिका लिखकर मीरां के जीवन और काव्य पर भी आवश्यक विवेचन किया है। राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति के गहरे जानकार डॉ हाड़ा ने यहां पुरोहित हरिनारायण, नरोत्तम स्वामी, कल्याणसिंह शेखावत तथा स्वामी आनंद स्वरूप द्वारा मीरां के पदों के संग्रहों से पद चुने हैं। डॉ हाड़ा की उदार और समावेशी दृष्टि ने इस संचयन को खास बनाया है। वे मीरां के पदों के पूर्व संग्रहकर्ताओं को भूमिका में याद करते हैं और उन पर हुए महत्वपूर्ण अनुसंधानकर्ताओं का उल्लेख भी करते हैं। यह उदार और समावेशी दृष्टि संचयन में आए पदों के चयन में भी मौजूद है।

पुस्तक :
मीरां रचना संचयन
संपादक :
माधव हाड़ा
प्रकाशक :
साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
प्रकाशन वर्ष : 2017
पृष्ठ: 208
मूल्य: ₹ 200

भक्ति काल की कवि मीरां इधर पुनर्नवा हो गई हैं। स्त्री विमर्श के उत्साह और आवेग में मीरां की पुनर्खोज उत्साहित करने वाली है। अस्मिता के अतिरिक्त आग्रह में उनके व्यक्तित्व की चमक से प्रभावित होकर अनेक बातें की गई लेकिन उनके काव्य संसार पर गहरी अंतर्दृष्टि से अध्ययन अभी भी शेष है। उनकी कविता के मर्म को समझने में कई मुश्किलें हैं जिसमें पहली बड़ी मुश्किल उनकी कविता के एक सर्वमान्य पाठ का न होना है। मीरां की कविताओं के हस्तलिखित पाठ अधिकांशतः अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी के हैं और ये लोक स्मृति पर आधारित हैं। इसके चलते इनमें बहुत वैविध्य और भिन्नता विद्यमान है। ये राजस्थानी के साथ गुजराती, ब्रज आदि भाषाओं में मिलते हैं और इनमें इन भाषाओं का मिलाजुला रूप भी मिलता है। पद्मावती शबनम ने अपने संग्रह में मीरां के एक ही पद के भिन्न भिन्न भाषाओं के अनेक पाठ प्रस्तुत किये थे जिनसे मीरां की कविता की गहरी लोक व्याप्ति का अनुमान किया जा सकता है। मध्यकालीन संत भक्तों से मीरां की पृथकता और विशिष्टता इस अर्थ में भी है कि उन्होंने न किसी पंथ में दीक्षा ग्रहण की और न अपना कोई नया पंथ - संप्रदाय बनाया। ऐसे में उनकी रचनाओं को संगृहीत करने और सुरक्षित रखने का काम भी लगभग नहीं हुआ। हिंदी विभागों में मीरां की जिन कविताओं को पढ़ाए जाने का चलन है उनका व्यवस्थित संग्रह भक्ति साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने किया था लेकिन वे भी इस द्वंद्व में थे कि मीरां को भक्त अथवा संत किस कोटि में रखें। इसी तरह जिस हस्तलिखित प्रति के आधार पर उन्होंने अपनी पदावली तैयार की उसका पाठ भी सर्वथा निर्दोष नहीं था। इन तमाम कारणों से मीरां की कविताओं को प्रामाणिक पदावली की तलाश बनी हुई है। मीरां के साहित्य के अनुसंधानकर्ता मनीषी पुरोहित हरिनारायण द्वारा तैयार मीरां बृहत्पदावली को राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान ने प्रकाशित किया था जिसमें 662 पद ही हैं।

मीरां के जीवन और समय पर गंभीर पुस्तक 'पचरंग चोला पहन सखी री' के लेखक माधव हाड़ा ने साहित्य अकादेमी के लिए 'मीरां रचना संचयन' तैयार किया है जिसमें मीरां के चुने हुए 316 पद हैं। डॉ. माधव हाड़ा ने संचयन के साथ एक भूमिका लिखकर मीरां के जीवन और काव्य पर भी आवश्यक विवेचन किया है। राजस्थानी भाषा, साहित्य और संस्कृति के गहरे जानकार डॉ. हाड़ा ने यहां पुरोहित हरिनारायण, नरोत्तम स्वामी, कल्याणसिंह शेखावत तथा स्वामी आनंद स्वरूप द्वारा मीरां के पदों के संग्रहों से पद चुने हैं। उन्होंने भूमिका में लिखा है, 'अधिकांश प्रचलित संकलनों में मीरां के पदों को प्रेम, विरह, भक्ति, उपालंभ, विनय, ज्ञान, चरित्र आदि भाव संज्ञाओं में वर्गीकृत या विभाजित किया गया है। यह पाठ को पहले से किसी अर्थ के खूंटे से बांध देने जैसा है, इसलिए यहां ऐसा नहीं किया गया है। यहां पद अकारादि क्रम से हैं और पाठक उनका अपना अर्थ करने के लिए स्वतंत्र हैं। मीरां के पद सदियों तक लोक स्मृति में रहे हैं

'मीरां की कविता उसके समकालीन संत-भक्तों से बहुत अलग और खास किस्म की है। उसकी कविता में जगत और जीवन का निषेध उस तरह से नहीं है, जैसा कि मध्यकालीन संत भक्तों के यहां है।'

और इस कारण इनमें इधर-उधर बहुत हुआ है, इसलिए इनमें भावों की आवृत्ति बहुत है। कहीं-कहीं तो पदों के पूरे चरणों की आवृत्ति है। आवृत्ति के बावजूद पद में कोई नया भाव या प्रसंग है तो उसे वहां लिया गया है।' इन पदों की भाषा के संबंध में डॉ हाड़ा का कथन है, 'पदों में शब्दों की बनावट में एकरूपता नहीं है। एक शब्द एक पद में जिस तरह से है दूसरे पद में उस तरह से नहीं है। शब्द को कोमल और मधुर करने या प्रवाह में डालने के लिए विकृत करना राजस्थानी सहित कई देशभाषाओं का स्वभाव है। मीरां के पदों में भी यह बहुत है। यहां इसीलिए देस देसलड़ो और प्रीत प्रीतड़ी हो गए हैं।' हाड़ा मीरां के पदों में मिलने वाली टेर या टेक को भी आवश्यक मानते हैं और इसे बौद्धों के चर्या गीतों से आई परंपरा से जोड़ते हैं।

हाड़ा ने परिश्रमपूर्वक पदों का चयन किया है और प्रत्येक पद के साथ पद में आए कठिन या अप्रचलित शब्द का अर्थ भी दे दिया है। मीरां के घटनापूर्ण जीवन से संबंधित प्रचलित-अप्रचलित पदों के साथ उन्होंने उदा -मीरां संवाद वाले पद भी इस संचयन में दिए हैं जिनमें स्त्री अभिव्यक्ति के सुंदर रंग आ गए हैं। उदा. मीरां की ननद थी और माना जाता है कि अपनी भाभी के वैराग्यपूर्ण व्यवहार से अन्य परिवारजनों की तरह वह भी अप्रसन्न थी। इन पदों में वह अपनी भाभी से खरी-खोटी कहती है और मीरां युक्तिसंगत उत्तर देती है। भूमिका में डॉ हाड़ा ने लिखा है, 'मीरां की कविता उसके समकालीन संत-भक्तों से बहुत अलग और खास किस्म की है। उसकी कविता में जगत और जीवन का निषेध उस तरह से नहीं है, जैसा ने मध्यकालीन संत भक्तों के यहां है। उसकी कविता में दृश्य और मूर्त का उत्साहपूर्ण आग्रह है और वह अपनी ऐंद्रिक संवेदनाओं और कामनाओं को खुलकर खेलने की छूट देती है।' वे स्पष्ट करते हैं कि जहां 'मध्यकालीन संत भक्त ब्रह्म सत्य जगत मिथ्या की लोकप्रिय और लगभग मान्य धारणा में सहज विश्वास के कारण लोकोत्तर के आग्रही थे। उनकी कविता में यह लोकोत्तर ही केंद्रीय सरोकार है, लेकिन मीरां की कविता में वस्तु जगत बहुत सघन और व्यापक रूप में मौजूद है। नदी, तालाब, पेड़, पौधे, पशु, पक्षी, हवा, बिजली, धरती, आकाश, बादल, बरसात, जंगल, समुद्र, महल, अटारी, वस्त्र, आभूषण आदि मीरां की कविता में जिस आग्रह और उत्साह के साथ आते हैं, वैसे किसी और मध्यकालीन संत-भक्त की कविता में नहीं आते। मीरां की कविता में इंद्रिय संवेदनाओं और कामनाओं की भी अकुंठ और निर्बाध अभिव्यक्ति है।'

हाड़ा का विनम्र प्रयास रहा है कि संचयन में मीरां की कविता के सब रंग आ जाएं और एक उपयोगी-सर्वस्वीकृत चयन तैयार हो सके। विश्वविद्यालयी पाठ के लिहाज से इस तरह के चयन की गहरी आवश्यकता को ऐसी ही उदार दृष्टि पूरा कर सकती थी। कठिन शब्दों के अर्थ देने के साथ ही यह संचयन सामान्य पाठकों के लिए भी काम का बन गया है। साहित्य अकादेमी का भी आभार किया जाना चाहिए कि मध्यकाल के लगभग अकेले स्त्री स्वर को देर से सही किंतु सम्मानजनक ढंग से प्रस्तुत किया।

अस्मितावाद के जिन आग्रहों के कारण इधर मीरां की कविता फिर चर्चा में है उनमें स्त्री व्यक्तित्व की उद्घोषणा सबसे प्रबल है। मीरां की कविताएं इसका उदाहरण है। यह उदाहरण इसलिए भी प्रभावी और आकर्षक है कि मध्यकालीन सामंती राजसत्ता के समक्ष मीरां अपनी बात कहने का साहस रखती हैं। दूसरी बात यह है कि मेवाड़ राजघराने के संबंध में यह भूलना नहीं चाहिए कि वह उत्तर भारत का सबसे प्रभावशाली राजघराना था और यदि खानवा के मैदान में मीरां के ससुर राणा सांगा की पराजय न हुई होती तो वे निश्चित ही दिल्ली के सम्राट होते। ऐसे पुराने और प्रतापी राजवंश की ज्येष्ठ वधू का साधुसंगत करना तथा राणा को चुनौती भरे स्वर में संबोधित करना नए उत्साह में बहुत मादक है। डॉ. हाड़ा ने संचयन में मीरां के इन पदों को भी स्थान दिया है -

राणो म्हारो कांई कर लेसी, मीरां छोड़ दई कुल लाज।

और

सीसोद्यो राणा, प्यालो महान क्यूं रे पठायो

भली- बुरी तो मैं नहिं किन्हीं, राणो क्यों है रिसायो

इसी तरह आत्म का कथन मीरां की कविता का आधुनिक पक्ष है जो मध्यकालीन कवियों में उन्हें कबीर के समकक्ष ले जाता है। डॉ. हाड़ा ने लिखा है, 'मध्यकालीन संत-भक्त अपने कविता में अपनी वैयक्तिक पहचान और अपने सांसारिक संबंधों के संबंध में मौन हैं, जबकि मीरां की कविता में यह सब आग्रहपूर्वक मौजूद है। मीरां संत-भक्तों की तरह न इनके प्रति उदासीन है और न इनको अनदेखा करती है। संत भक्त अपनी स्थानिक पहचान को लेकर सजग नहीं है लेकिन मीरां इसको याद रखती है। वह कुल की मर्यादा छोड़ती है लेकिन अपनी पहचान नहीं छिपाती।' उन्होंने ऐसे कुछ सुंदर पद संचयन में दिए हैं -

साथ संग मोहि प्यास लागे, लाज गई घूंघट की

पीहर मेड़ता छोड़ा अपना, सुरत निरत दोइ चटकी।

और

इक कुल राणा त्यारूं, आपणौं, दूजो राह राठौड़

तीजो त्यारूं राणा मेड़तो, चौथो वड़ चितौड़।

हाड़ा की उदार और समावेशी दृष्टि ने इस संचयन को खास बनाया है। वे मीरां के पदों के पूर्व संग्रहकर्ताओं को भूमिका में याद करते हैं और उन पर हुए महत्वपूर्ण अनुसंधानकर्ताओं का उल्लेख भी करते हैं। यह उदार और समावेशी दृष्टि संचयन में आए पदों के चयन में भी मौजूद है। हाड़ा का विनम्र प्रयास रहा है कि संचयन में मीरां की कविता के सब रंग आ जाएं और एक उपयोगी-सर्वस्वीकृत चयन तैयार हो सके। विश्वविद्यालयी पाठ के लिहाज से इस तरह के चयन की गहरी आवश्यकता को ऐसी ही उदार दृष्टि पूरा कर सकती थी। कठिन शब्दों के अर्थ देने के साथ ही यह संचयन सामान्य पाठकों के लिए भी काम का बन गया है। साहित्य अकादेमी का भी आभार किया जाना चाहिए कि मध्यकाल के लगभग अकेले स्त्री स्वर को देर से सही किंतु सम्मानजनक ढंग से प्रस्तुत किया। ■■